Today's Poem – 21.08.2014

बाप हमें संगम पर दिलाते स्मृति

बताते सदा हलके रहने की युक्ति

याद से ही पाप कटेंगे, फिर खुशी रहेगी

बाप की याद से आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी

अविनाशी सर्जन से कुछ नहीं छुपाना

इस जन्म के पापों को सच सच बताना

बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ

आकर ड्रामा का राज़ समझाता हूँ

ज्ञान अंजन देकर अज्ञान अंधेरे को दूर करना

ब्रह्मा बाप समान कुर्बान जाने में पूरा फालो करना

शरीर सहित सब खलास हो जाना

इसलिए इससे पहले ही जीते जी मरना

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!